अक्तूबर-दिसम्बर 2023

समसामयिक हाइकु संचयनिका

हाइकु मञ्जूषा

हाइबुन विशेषांक

संपादक
प्रदीप कुमार दाश 'दीपक'

हाइकु मञ्जूषा त्रैमासिक

(सदस्यता शुल्क)

एक वर्ष	-	**400 रुपये (रजिस्टर्ड डाक से)**
पाँच वर्ष	-	**1600 रुपये (रजिस्टर्ड डाक से)**

Account detail : PRADEEP KUMAR DASH

A/c No. : 3282604179, IFSC : CBIN0281208

Central bank of India, Sitapur, (C.G.)

Mob. 7828104111

हाइकु मञ्जूषा

समसामयिक हाइकु संचयनिका

अक्तूबर-दिसम्बर : 2023 (त्रैमासिक)

संपादक
प्रदीप कुमार दाश 'दीपक'

संरक्षक
डॉ. मिथिलेश दीक्षित

संपादक मण्डल
अविनाश बागड़े (नागपुर)
देवेन्द्र नारायण दास (बसना)
केशव मोहन पाण्डेय (नई दिल्ली)

प्रकाशन स्थल : साँकरा, जिला-सारंगढ़ (छ.ग.) पिन – 496554, मो.नं. – 7828104111

संपादकीय...

'हाइबुन' गद्य एवं पद्य का मिश्रण रूप है। 'हाइकु मञ्जूषा' का यह अंक हाइबुन शैली पर समर्पित विशेष अंक के रूप में प्रकाशित हो रहा है। परंपरागत रूप से जापान में इस विधा में सफरनामा यात्रा वृत्त या डायरी के रूप में लिखा जाता था। यात्रा के उपरांत बौद्ध भिक्षु दिन भर की अपनी पूरी यात्रा/दिनचर्या की स्मृति को सीमित गद्य रूप में लिखने के बाद गद्य के चरमोत्कर्ष रूप में एक हाइकु लिख लेता था।

यात्रा संदर्भ में बाशो जी का कथन है कि- "हर दिन एक यात्रा है, और यात्रा ही घर है।" हाइबुन का गद्य अक्सर यात्रा से संबंधित एक दृश्य (एक स्मृति एक विशेष परिदृश्य या विशेष क्षण) के प्रकटीकरण के लिए समर्पित होता है। इसका समापन हाइकु रचना के अंत में दिखाई देता है। यह विधा अब जापान तक ही सीमित नहीं बल्कि इसने खुद को विश्व साहित्य में एक शैली के रूप में स्थापित कर लिया है।

हाइबुन विधा के विकास उद्देश्य को ले कर "हाइकु मञ्जूषा" के इस विशेषांक में पचास रचनाकारों के एक-एक हाइबुन यानी कि पचास हाइबुन रचनाएं प्रकाशित हो रही हैं। हाइबुन साहित्य को समर्पित इस ऐतिहासिक विशेषांक में सम्मिलित सभी हाइबुन रचनाकार मित्रों को विशेष शुभकामनाएं बधाइयां एवं साधुवाद ...

- प्रदीप कुमार दाश 'दीपक'

संपादक : हाइकु मञ्जूषा

कुशीनगर यात्रा

एक अजीब अनुभव है- शब्दों में नहीं उतार सकती, सिर्फ़ महसूस कर रही हूँ....

प्राणों का यह स्पन्दन शब्दातीत है....

तथागत की प्रत्यक्ष उपस्थिति !

कुशीनगर भविष्य में बहुत विकसित होगा। अनेक बौद्ध देशों ने यहाँ भूमि-खण्ड लेकर मंदिर-निर्माण आरम्भ कर दिया है....

सभी ऐतिहासिक स्थल देख डाले, पर सबसे रोमांचक अनुभव स्तूप का रहा....

सभी स्थान बहुत बहुत रमणीक हैं....

मग्न विहार.... सुवर्ण प्रतिमा (सोये हुए बुद्ध) और बहुत कुछ।

दक्षिणाभिमुख
निर्वाण की शान्ति है
बुद्ध के मुख !

- डॉ. सुधा गुप्ता

काकली, 120 बी/2, साकेत, मेरठ (उ.प्र.)

(सफर के छाले हैं, प्रथम संस्करण - 2014, पृ.क्र. 27 से साभार)

हाइबुन विशेषांक के रचनाकार

अजय चरणम्, अमिता शाह 'अमी', अर्चना अनुपम, अलंकार आच्छा, अविनाश बागड़े, डॉ. आनन्द प्रकाश शाक्य, आभा दवे, आरती परीख, इन्दिरा किसलय, अंजुलिका चावला, अंजू श्रीवास्तव निगम, कल्पना दुबे, कुन्दन पाटिल, चन्द्र प्रभा, देवयानी बनर्जी, देवेन्द्रनारायण दास, निर्मला हांडे, निहाल चंद्र शिवहरे, डॉ. नीना छिब्बर, प्रतिभा त्रिपाठी, प्रतिमा प्रधान, प्रदीप कुमार दाश "दीपक", पूनम भू, प्रमोदिनी शर्मा, प्रवीण सिंह बी. सिन्दल, पुष्पा सिंघी, डॉ. पूर्वा शर्मा, बन्दना गुप्ता, मधु गुप्ता "महक", मधु सिंघी, मनीष कुमार श्रीवास्तव, डॉ. मिथिलेश दीक्षित, मीनाक्षी कुमावत 'मीरा', डॉ. मंजू यादव 'मृदुल', राकेश गुप्ता, राजेन्द्र सिंह राठौड, राधावल्लभ अग्रवाल, रामनिवास पंथी, रूबी दास, वृंदा पंचभाई, विद्या चौहान, विष्णु शास्त्री 'सरल', शर्मिला चौहान, स्वाति गुप्ता 'नीरव', सुनीता दीक्षित ‘श्यामा’, डॉ. सुरंगमा यादव, सुशील शर्मा, संतोष बुधराजा, हरावती लकड़ा, डॉ. श्रद्धा वाशिमकर

---0---

हाइबुन

मौन है मणी

नौकरी से घर लौट आया हूँ। घूमने की पुरानी आदत है। मणी नदी के पास खड़ा हूँ। सूर्य की लाली निकल रही है । चिड़ियाँ बतिया रही हैं । हल्की-हल्की मीठी हवा चल रही है । सम्पूर्ण वातावरण में जीवन पसर रहा है।लेकिन जिस मणी नदी के किनारे खड़ा हूँ,वह निष्प्राण पड़ी है; कोई हलचल नहीं। दुबली व काली हो गई है। न जाने कब से बीमार है। इस नदी से मेरा अतीत जुड़ा है; बहुत पुराना रिश्ता है।

बचपन में जब स्कूल से साथियों के साथ लौटता था, तब इसी नदी को पार कर घर जाता था। प्यास लगती थी, तो दो-चार घूँट जल पी लेता था। जी चाहता, तो हाथ-पाँव और चेहरे को धो लेता था। उस समय मणी स्वच्छ-सुन्दर, इठलाती-बलखाती, लम्बी-लम्बी बाँहें फैलाये, स्वागत करती थी। मगर आज ...

मणी को, मैं स्पर्श करना चाहा । झुका, लेकिन स्पर्श कर न सका। मुट्ठी को भींच कर रह गया। कुछ पल बाद घर लौट आया -

मेरी सजा को
खुद समेटे हुए
मौन है मणी।

- अजय चरणम्
पूरब आजीम गंज, हवेली खड़गपुर
मुंगेर – 811213 (बिहार)

सुहाना सा सफर

प्लेन का सफर बहुत खूबसूरत होता है । आसमान की गोद में बादलों के साथ सफर सुहाना हो जाता है। नागपुर से मुंबई, मुंबई से दुबई और दुबई से मेलबोर्न-ऑस्ट्रेलिया की फ्लाइट का सुखद अनुभव रहा। प्लेन शुरु होते ही पहले जमीन छूटती है। सहज नहीं लगता जमीन से नाता टूटना । फिर बड़ी तेजी से आसमान की ओर जाना रोमांचक होता है। उपर से घर, रास्ते, पुल,जंगल, नदिया, पहाड़ सब एक पेंटिंग जैसे नजर आते हैं। कुदरत की रचनात्मकता अद्भुत दिखाई देती है। सुबह के समय सौम्यता लिए हुए, दोपहर में तेजस्वी और ढ़लती शाम में हल्के से धुंधले दृश्य नजर आ रहे थे। रात्री में तो और भी ज्यादा सुंदर नजारा होता है । जमीन पर लगी हुई सारी लाइट्स बहुत सुंदर लगती है।

प्लेन के आसमान में स्थिर होने के बाद लगता है हम हवा में आगे बढ़ रहे हैं और हमारे साथ सफेद बादल ..नीला आसमाँ ..चमकता सूर्य साथ चल रहे हैं। कई बार धने बादलों के बीच से प्लेन गुजरता है तो खिड़की पर सफेद रुपहले बादल लिपट जाते हैं। आकाश नजर नहीं आता। ऐसे ही सुंदर सुंदर दृश्य देखते हुए और उड़नखटोले में हवाई सुंदरियों की सेवा का लाभ लेते हुए दुबई से 12 घंटे बाद मेलबोर्न पहुंचे।

राह निराली
उड़नखटोले की
किस्मत आली।

- अमिता शाह 'अमी'
मेलबोर्न, ऑस्ट्रेलिया

कन्याकुमारी : महासिंधुओं की त्रिवेणी

महासागरों की त्रिवेणी....! त्रिरंग जल का संगम-स्थल 'कन्याकुमारी'... अनोखी छटा...!

महादेव के तीन नेत्र तो नहीं तीन महासागर ? अथाह दृष्टि ! अथाह गहराई का आभास देते तीन महासिंधु ! टापू में स्थित है कन्याकुमारी मंदिर ....उसमें है राजा भरत पुत्री शिव को पति रूप में प्राप्त करने की अभिलाषी तपस्विनी 'कुमारी' ....सूर्योदय अपनी सुंदरता मानो भरतपुत्री 'कुमारी' पर उंडेल देना चाहता हो ...

विस्मयकारी ! कौतूहलकारी दृश्य ! मनभावन - मनोहारी छटा ! तीन महासागर कन्याकुमारी मंदिर को अपनी बाँहों में समेटे हैं... सिंधु-लहरें जलतरंग बजा रही हैं... मंदिर कृतज्ञ है महासिंधुओं की लहरों के स्पर्श से ! भाग्य पर इठला रहा है 'कन्याकुमारी मंदिर' ...

सिंधु त्रिवेणी
त्रिलोचन शंकर
कन्याकुमारी।

- अर्चना अनुपम
रायपुर (छत्तीसगढ़)

सो गयी नदी

'राजस्थान का मानचेस्टर' के नाम से प्रसिद्ध औद्योगिक नगर भीलवाड़ा का एक गाँव रुपी नगर - आसीन्द। सवाई भोज के पवित्र मंदिर की वजह से तीर्थस्थल के रूप में प्रसिद्धि पा रहा आसीन्द मेरा ननिहाल होने के साथ-साथ मेरी जन्मस्थली भी है। इसीलिए अनेकों बार यहाँ रहने का अवसर मिलता रहा है। इस बार गया तो देखा कि विकास की आँधी ने गाँव की सीमाओं को दूर-दूर तक धकेलकर इसे एक छोटे-से नगर में तब्दील कर दिया है। नगर से सटकर एक नदी बहा करती थी। कभी लबालब पानी से भरी नदी अब एकदम सूखकर अपनी बदहाली की दारुण कथा बयां कर रही है।

मेघों से दुखी
ले रेतीली चद्दर
सो गयी नदी।

जन्मस्थली होने की वजह से आसीन्द सदा ही मेरा प्रिय स्थल रहा है। यहाँ की गलियों, चौबारों, बाजारों और दुकानों में मेरी धमाचौकडी के सैंकडों किस्से दफ़न हैं। अपनी यात्रा के दौरान नदी का हाल देखकर बड़ा दुख हुआ। पानी तो बहुत पहले ही सूख चुका था, लेकिन पानी के सूख चुकने के बाद भी जिस नदी की मिट्टी एकदम मुलायम बालू रेत-सी थी, अब वह कंकरीली और पथरीली हो गयी थी। नदी अब लोगों के लिए मल-मूत्र त्यागने के स्थल में परिवर्तित हो चुकी थी। कई जगह कचरे के ढ़ेर ने बूढ़ी नदी को और अधिक बदबूदार; कंटिली झाड़ियों ने झुर्रिदार बना दिया था। व्यथित मन नदी की जवानी को याद करके परेशान था।

रखता सदा
मिट्टी-पानी का लेप
नदी को जवाँ।

- अलंकार आच्छा

भग्नावशेष

घर के पास ही हवाई अड्डे से सटा हुआ एक जंगलनुमा इलाका। रोज प्रातः भ्रमण। यहां हरियाली के बीच बीच में इतिहास के पसरे हुए भग्नावशेष उनके आस पास ही प्रातः कालीन भ्रमण के पड़ते जाने कितने ही कदम। कभी इन मानव निर्मित पर अब खंडहरों में तब्दील भोसले वंशीय राजाओं की सेना जहां चहलकदमी हुआ करती थी। आस खामोशी ओढ़े है। प्रकृति के बीच में समय चक्र का शिकार एक पूरा सेटअप शनै: शनैः धूल धूसरित होता हुआ मगर प्रकृति पतझर से बसंत और फिर पतझर के दौर से गुजरती हुई जैसे सब कुछ देख रही है। वह तो जैसे सदाबहार होती है हर हाल में।

कदमताल
कुदरत के साथ
संभव नहीं।

- अविनाश बागड़े

धम्म यात्रा

बुद्ध पूर्णिमा का पावन पर्व संकिसा बौद्ध तीर्थ भ्रमण अद्भुत रोमांचकारी हजारों उपासकों की भीड़, बौद्ध भिक्षुओं के द्वारा बुद्ध वन्दना का उद्घोष -

"बुद्धं सरणं गच्छामि"
"धम्मं सरणं गच्छामि"
"संघ सरणं गच्छामि"

सबकी शान्त मुद्रा मन को सुखानुभूति करा रही थी। सम्राट अशोक महान द्वारा स्थापित किये गए गज स्तम्भ का भग्नावशेष देखते ही बनता है। पुरातत्व विभाग द्वारा उत्खनन से प्राप्त प्राचीन ऐतिहासिक महत्व की विभिन्न वस्तुएं मन मोह रही थीं। लंका, जापान कोरिया म्यांमार कम्बोडिया भारत के बौद्ध मठ आस्था का चरम सुख प्रदान कर रहे थे। कल-कल निनाद करती काली नदी प्रवाहमान हो रही थी।

मन रह रह कह रहा था....

आओ मन में दीप जलाएं।
बुद्ध शरण में जाएं।
धम्म शरण में जाएं।
संघ शरण में जाएं।

मन हरसे
महाकारुणिक की
दया बरसे।

- डॉ. आनन्द प्रकाश शाक्य 'आनन्द'
ज्योंती मैनपुरी२०५२६३ (उ.प्र.)

बादल के रुप

बहुत दिनों से किसी पर्यटक स्थल पर जाने का कार्यक्रम बन रहा था। देश - विदेश में एक से बढ़कर एक कई जगह हैं जहाँ पर जा सकते हैं, पर इस बार किसी पहाड़ी और बर्फीली जगह का लुत्फ उठाया जाए यही सोच कर कश्मीर जाने का कार्यक्रम बनाया। हम सभी कश्मीर जाने के लिए बड़े ही उत्सुक थे। जब हवाई जहाज ने श्रीनगर की उड़ान भरी तो मन प्रसन्नता से भर गया। हवाई जहाज से नभ और धरा का सौंदर्य मन को लुभा रहा था। उड़ते हुए बादल के कई रूपों को देखकर मन से कुछ पंक्तियां निकली –

मेघ सौंदर्य
रूप कुदरत का
दैविक शक्ति।

कब श्रीनगर आ गया पता ही नहीं चला। जब वहाँ घूमने के लिए निकले तो वहाँ के प्राकृतिक सौंदर्य ने मन मोह लिया। गुलमर्ग, सोनमर्ग, पहलगाम, चंदनवाड़ी और अन्य स्थलों को देख कर हम सभी कह उठे -

बर्फीली हवा
तन-मन को छुए
खुशी से भरे।

- आभा दवे
मुंबई

भारत यात्रा

इस साल जून जुलाई महीने में भारत यात्रा के दौरान गुजरात से राजस्थान में आये पर्यटक स्थल माउंट आबू घूमने जाने का मौका मिला। हलकी सी बारिश का लुत्फ उठाते हुए हमने पूरी मुसाफिरी अपनी गाड़ी में ही की थी। रास्ते में जहां अच्छा नजारा देखने को मिला; रूक गये। अरावली की पहाड़ियां और बारिश का मौसम... अह... ह.. पहाड़ी रास्ते पर अद्भुत नजारा देखने को मिला....

मेघ मल्हार
हरित चुनरी में
पहाड़ी झूमे।

नक्की झील आबू का एक सुंदर पर्यटन स्थल है। कहा जाता है कि, एक हिंदू देवता ने अपने नाखूनों से खोदकर यह झील बनाई थी। इसलिए इसे नक्की (नख या नाखून) नाम से जाना जाता है।

शालाओं में छुट्टियां चल रही थी, इसकी वजह से आबू पर्यटकों से भरा हुआ था। नक्की झील में नौका विहार के लिए लंबी कतार लगी हुई थी।

शाला में छुट्टी
सैलानी उमड़ते
नक्की की झील।

- आरती परीख
सउदी अरब

तड़प

आठों याम तड़पता है समंदर। एक पल को चैन नहीं। आदि क्षण से उसका दर्द समझ न पाया कोई। सूरज, स्वर्ण रज बिखेरे, साँझ लहरों में लाली घोल दे या चन्द्रमा, चाँदी बिछा दे। थमता नहीं उसका हाहाकार। जैसे दर्द उसका स्वभाव बन गया है। पीड़ा से आसक्ति जो आ तो सकती है, जा नहीं सकती।

हर लहर, दूजी को ठेलती हुई, किनारे से मिलने को बेकरार, आतुर, व्यग्र, बेभान। फिर पुनर्जन्म के लिये।

सागर की अथाह अनंत जलराशि, सारे तर्क छीन लेती है। नील नभ का वितान और लहरों को चीरती हुई मंथर गति से डोलती हुई नौका। सोचा मन के कागज़ पर दरिया को खत लिखूं ! पर ये क्या एक ऊँची लहर उठी और तुषार कणों से भिगो गई। सीगल मंडराते रहे। लोगों के हाथों में रखे वेफर्स चोंच से उठाकर जल पर कला-बाजियां खाते रहे।

सृष्टि चेतना का विराट दर्शन अगतिक कर गया।हम सफर में ही रहना चाहते हैं, आखिर क्यों ? सफर ही मंज़िल है शायद। लगा कि गेट वे ऑफ इंडिया से एलीफैंटा केव्ज तक दस किलोमीटर का सफर कभी पूरा न हो। बस अरब सागर पर तिरती रहे नौका।क्याकरनाहैदुनियावी ऐश्वर्य, आकाश-गामी रफ्तार और गलाकाट स्पर्धा का।

सिंधु में बिंदु से हम और बिन्दु में सिन्धु को साकार करता महार्णव। परासत्ता का गणित कब किसी से हल हुआ है जो अब होगा। सफर को अंजाम तक पहुँचना ही होता है फिर शुरू करने के लिये।

नहीं है अंत
कहां खत्म होती है
यात्रा अनंत।

- इन्दिरा किसलय

बैंगलोर से मैसूर सड़क यात्रा

प्रकृति पत्थर दिल नहीं होती, उसमें पर्वतों शिलाओं को सम्मानित स्थान अवश्य मिलता है। बंगलौर की कंक्रीट की इमारतों ने हाथ छोड़ दिया तो सड़क के दोनों ओर आटे की लोइयों सदृश्य गोल प्रस्तर शिलाओं की श्रृंखला दिखी । आकांक्षाओं के तरु उन शिलाओं के संधि क्षेत्र की उर्वरता पर दृढ़तापूर्वक पैर जमाए खड़े थे । कुछ आगे केक की मानिंद खड़ी कटाई वाला एक पहाड़ था उसपर धरा के समानांतर पीली, काली, भूरी धारियों से प्रकृति ने शताब्दियों तक हुए जलवायु परिवर्तन के ग्राफ परत दर परत उकेर दिए थे। समय के इन अनुपम दस्तावेजों के आगे छह लेन की सड़क उस पर गुज़रता हमारा वाहन, उसकी गति सब यकायक बौने हो गए।

तू बुलबुला
क्षणिक उपस्थिति
सृष्टि में कण।

- अंजुलिका चावला

चिल्का का विहंगम दृश्य

उड़ीसा के चंद्रभागा तट से टकराती समुद्र की उत्कट लहरें। कतार में लगे, हवा के साथ दौड़ लगाते नारियल के विशालकाय वृक्ष। इन वृक्षों के समानांतर चलती सीधी-सपाट सड़क, चिल्का झील तक पहुँचती। चिल्का का विहंगम दृश्य मन को सम्मोहित कर गया। सैलानियों का जमावड़ा और जल क्रीड़ा करते प्रवासी पक्षी। ईश्वर ने मानो किसी कुशल चितेरे सा प्रकृति को अनंत तक कैद कर रखा हो। दूर तक फैला जल क्षेत्र और क्षितिज से मानो होड़ करता, धुंधला सा नजर आता एशिया का सबसे बड़ा लैगून।

लैगून देखने की उत्सुकता लगभग हर सैलानी को थी। हम भी इतनी दूर लैगून को पास से देखने की इच्छा लेकर ही आये थे। नीली ,साफ, स्वच्छ चिल्का झील और समुद्र के पानी का खारापन आपस में मिल, जीवन का एक सुदंर संदेश दे रहे थे। मीठा और खारा भी आपसी सामंजस्य स्थापित कर एक दूसरे के अस्तित्व को स्वीकार कर, साथ साथ प्रवाहित हो रहे थे।

चिल्का की झील
प्रवासी पक्षियों को
देती आश्रय।

- अंजू श्रीवास्तव निगम

ताजमहल

थोड़े समय पहले ताजमहल देखने का अवसर मिला। दिल्ली से लगभग दो सौ कि.मी. की दूरी पर स्थित बेशकीमती रत्नों से सजा श्वेत पत्थरों से निर्मित सुन्दर कारीगरी का बेजोड़ नमूना और प्रेम का नायाब तोहफा संगमरमर की भव्य इमारत है - "ताजमहल"। यह आगरा शहर की शान है। दिल्ली की बीमार सी बेरौनक यमुना यहाँ प्रफुल्लित स्वच्छ, निर्मल होकर मानों ताजमहल को निहारती हैं। सुन्दर इमारत के चारों तरफ हंसते, खिलखिलाते बाग -बगीचे, झर-झर झरती बूंदों के साथ नृत्य करते सुन्दर फौव्वारे बड़े ही आकर्षक लगते हैं। इसकी कलात्मक साज सज्जा में चांदनी रात और चार चांद लगा देती है। प्रेम और सौन्दर्य का अद्भुत संगम ताजमहल सुन्दर पर्यटन स्थल है। पर्यटन विभाग द्वारा आयोजित ताज महोत्सव में कला और संगीत की मनमोहक प्रस्तुति आकर्षित करती है। इसकी विश्व ख्याति है। यह बेगम मुमताज़ महल की स्मृति में शाहजहां के प्रेम का इज़हार है। यह सब बताता हुआ गाइड बादशाह और बेगम की कब्र के पास ले जाकर ताजमहल का इतिहास बताता रहा। मैं प्रेमी के प्रेम दास्तान को अभिभूत सुनती रही। नतमस्तक हुई। वह बड़ी शान से कहता रहा ऐसी कोई दूसरी इमारत न बन सके इसलिए बादशाह ने मजदूरों के हाथ कटवा दिए। क्योंकि केवल और केवल मुमताज़ महल की याद ही यादगार बनी रहे। सुन कर मेरा मन विचलित हुआ। प्रेम तो बहुत पवित्र, कोमल भाव है, फिर वह इतना क्रूर कैसे हुआ।

प्रेम कहानी
इक राजा औ रानी
ताज निशानी।

- कल्पना दुबे

डर के आगे जीत

पचमढ़ी की नागद्वारा यात्रा घने वन ऊँचे विशाल पर्वत दुर्गम रास्तों से अपनी मंजिल तय करने होते है। प्रथम हमें काजरी में रूकना पड़ा, फिर वहां से हम निशान गढ़ के लिए आगे बढ़े। रास्ते और दुर्गम होते गये, एक जगह तो हमारे आधे से ज्यादा साथियों की हिम्मत जवाब दे गई और वे टेन्ट में वापस चले आए पर मैं कुछ युवा साथियों के कहने पर - चलो काका हम भी मदद करेंगे और यह यात्रा एक दूसरे के मदद से ही पूरी होती है चलो 'सेवाभगत' सामने पहाड़ पर संकरा रास्ता दूसरी ओर गहरी खाई पहाड़ पर एक मोटी रस्सी पकड़ कर उपर चढ़ना मानो हमारी सेना का प्रशिक्षण चल रहा हो जहां डर -भय है कठोर परिश्रम है और युवाओं के सहयोग से निशान गढ़ के जोखिम भरे रास्ते को पार करते हैं जैसे तैसे हम निशान गढ़ पहुँचे जो एक टिले पर स्थित है। ज्यादा से ज्यादा दस वर्ग फिट के दो प्लाट हो और एक प्लाट से दूसरे पर जाने का छोटा रास्ता तीन-चार फिट का वह भी इतनी ऊंचाई पर और वहां इतनी तेज हवा कि हमें बैठे बैठे एक स्थान से दूसरे स्थान जाना पड़ता है। एक छोटी सी गलती या चुक यानी मृत्यु तय। जैसे ही निशान गढ़ यात्रा पूर्ण हुई हमें लगा कि हमने एक बहुत बड़ी जंग जीत ली। डर और भय के साये से हम आगे निकल चुके थे। एक नई ऊर्जा, हिम्मत व जोश हमारे भीतर समाहित हो गये।

डर का साया
निशान गढ़ यात्रा
ऊर्जा संचार।

निशान गढ़
हिम्मत परिश्रम
विजय गाथा।

- कुन्दन पाटिल

धवल पर्वत श्रेणी

ऊपर निगाहें उठी तो पर्वत श्रेणियां बर्फ़ ढकी दिखाई दीं। मन प्रसन्न हो उठा और हल्का भी। अरे ये मसूरी की पहाड़ियाँ ! यह चोटी दिखाई दे रही थी पर मन की उद्विग्नता के चलते निगाहें ऊपर ही नहीं की थीं। शुक्रवार को आयी थी। आज बुधवार हो रहा है। कैसी अन्यमनस्कता में दिन बीत गए। मकान की छत पर भी नहीं गई। अब प्रफुल्लता जागी तो सोचा ऊपर छत पर जाकर और खुला-खुला नज़ारा दिखाई देगा।

आज धूप खिली थी। मौसम सुहाना था। ऊपर गई। छत पर कुर्सी डालकर बैठ गई। सुदूर पहाड़ों की चोटियॉ हरियाली से ढकी थीं। केवल सामने वाली पर बर्फ़ थी। ज़्यादा बर्फ़ तो नहीं दिखाई दी, पर लगा जैसे अपनी सीमा से बाहर जाकर दृष्टि अपार विस्तार पा रही है।

खुला खुला मैदान, वृक्षों की पॉति, फिर मकानों पर घेरा, फिर अर्ध वृत्ताकार पहाड़ियों का घेरा। उत्तर तरफ़ की पहाड़ियाँ हरीतिमा से ढकी थीं तो सामने पूरब की पहाड़ियाँ धवल थीं। बीच में धुँध व कोहरा सफ़ेद धुएँ सा था। सब जगह शांति थी। आसमान में नीलिमा थी, नीचे हरियाली। चारों और उजली धूप बिखरी थी। शांत वातावरण। सच में देवभूमि है यह। चिंताएं लगता है कि नीचे ही छूट गईं। मसूरी यात्रा का अनुपम दृश्य –

उजली धूप
शुभ्र पर्वत श्रेणी
नभ नीलाभ।

- चन्द्र प्रभा

बुद्ध की मूर्ति

सन 2003 में अपनी सखियों और बच्चों के साथ मैं नासिक और औरंगाबाद सैर के लिए गई थी। नासिक में हम एकादशी के दिन पहुंचे और हमें भारत के द्वादश शिवलिंग में से एक त्रयंबकेश्वर महाप्रभु के दर्शन प्राप्त हुए। नासिक में हमने कई अन्य मन्दिर भी देखे और गोदावरी नदी की ठंडी हवाओं को महसूस किया। हजारों भक्तों के बीच राम जी की पालकी को भी करीब से देखने का अवसर मिला। सबसे अधिक खुशी मुझे तब हुई जब अजंता गुफा के काले पत्थर में तराशी हुई, रेशम सी चमकती बुद्ध मूर्ति देखी।

बुद्ध की मूर्ति
अहिंसा के द्योतक
रेशम जैसी।

अहिंसा पथ
स्वागत तथागत
अवतार हो।

- देवयानी बनर्जी

प्रकृति और जीवन

मेरे इलाज हेतु सपरिवार घर से विशाखा पट्टनम के लिये निकले, रेल का सफर, बैठे-बैठे मैं बाहर प्रकृति को देखता रहा, कई दृश्य आंखों से आ मिलते और छूटते जाते, सफर में हम बढ़ते गये। मंजिल पहुंचे तो, ठहरने हेतु कमरा आरक्षित करा कर, हास्पिटल आये, डॉक्टर से इलाज करा कर दवा लेते हुए कमरे में वापस आये। भोजन कर थोड़ा सा आराम करने के बाद संध्या को बेटे के आग्रह पर समुद्र की ओर भ्रमण के लिए निकले। हिन्दमहासागर, हम पहुंच कर देखे समुद्र की बड़ी-बड़ी लहरें उठती-गिरती और बहती, जैसे हमारे जीवन के सफर में हम गिरते, उठते, चलते रहे मंजिल की ओर, मैंने एहसास किया प्रकृति और जीवन में कितनी समानता है !

रिश्तो का खेल
सब मिलते रहे
छूटते गये !

जीवन-यात्रा
उठते औ गिरते
चलते रहे।

- देवेन्द्रनारायण दास

कुवैत की यात्रा

22 अगस्त 2005 जीवन की अविस्मरणीय यात्रा हवाई जहाज की, वह भी कुवैत एयरवेज की बोइंग से। सुबह 07.00 बजे बोइंग में पांव रखा तो देखते रह गयी भव्यता कल्पना से परे, खिड़की के पास वाली सीट मिली थी, अब तो पलकों ने झपकना भी बंद कर दिया। बादलों के इतने सारे रंग, काले, भूरे, गहरे भूरे, सूर्य किरण से लाल, नारंगी, पीले, सुनहरे, सफेद अहह , मन प्रसन्न। ये घने हरे खेत होंगे , ये सफेद जरूर राजस्थान का रेतीला इलाका होगा । ये लम्बी सी काली लाइन , भारत -पाक बॉर्डर होगी। ये घना जरूर लाहौर होगा। ये हरे-भरे जरूर मेवे काजू, बादाम, अक्रोड के बाग होंगे। ये नीला नीला सागर जैसा दिख रहा है। ये बादल आ गए कुछ नहीं दिख रहा । एयरहोस्टेस बोली वेल कम टू कुवैत । कुवैत आ भी गया चक्कर लगा रहा। क्या गजब का एयरपोर्ट ओहो। वो सामने गोल गोल जरूर पेट्रोल के कुएं होंगे, विशाल अरब सागर। कहीं भी हरियाली नही दिख रही, अरे ये पेड़ -- जरूर खजूर के होंगे। जब उठने का समय हुआ तो, गर्दन, हाथ, कमर सब अकड़ गए । बड़ी मुश्किल से खड़ी हुई , आंखे भी लाल। घण्टा भर हो गया शर्तें पूरी करते करते, सामान उठाया, बड़ी दूर चलने के बाद आत्मबोध (बेटा) दिखा 3 साल बाद, आंखे भर आयी । एयरपोर्ट से बाहर आये, लगा किसी बॉयलर के अंदर घुस गए 48 - 49 डिग्री टेम्प्रेचर , कार भी बहुत दूर पार्किंग में। बच्चों के सिर पर नेपकिन डाली, मैंने सिर पर पल्ला लिया, फिर भी पांव आगे चल ही नहीं रहे थे। सब दौड़ने लगे, मैं रेंगने लगी। कार के पास पहुंचने पर बोल पड़ी -

ये है कुवैत
पेट्रोल की गरमी
हवा में छायी।

- निर्मला हांडे

नियाग्रा जल प्रपात

विभिन्न विचार धाराओं के कनाडा एवं अमेरिका विश्व के दो शक्तिशाली देश जहाँ की सेनायें अपने आप में सक्षम । प्रकृति की अनुभव देन नियाग्रा फाल जहाँ मीलों तक अथाह जलराशि के वेग, संवेग, कोलाहल को अनुभव किया जा सकता है। प्रकृति जहाँ की स्वयं रक्षक है। प्रकृति ही सेनानायक है। यहाँ जलधाराओं की सीमा पर न कोई सैनिक है न ही कोई सुरक्षा दीवार। यहाँ प्रकृति स्वयं ही सभी की सुरक्षा के लिए तत्पर है। कनाडा के पर्यटक लाल रंग की बरसाती में तो अमेरिका के पर्यटक नीली बरसाती में अदभुत छटा बिखराते हुए स्टीमर पर जलधारा को चीरते हुए जब विचरण करते हैं तो ऐसा प्रतीत होता है कि प्रकृति के प्रभाव में विश्व बन्धुत्व के भाव का उदय हो कर समस्त ब्रह्मांड में गुंजायमान हो रहा हो जिसे मैंनें प्रत्यक्ष रुप में जलधारा में सपरिवार अनुभव किया है । फुहारों से मन अदभुत ईश्वरीय शक्ति को आत्मसात करता है।

नियाग्रा फाल
अमेरिका कनाडा
उन्नत भाल।

- निहाल चन्द्र शिवहरे
(झाँसी)

रेत

राजस्थान का नाम सुनते ही आँखों के सामने रेत ही रेत, बिना हरियाली की धरा, बूंद-बूंद पानी को तरसती आँखें, सूरज का अपना घर जहाँ वो अलसुबह आता है ढीठ बनकर सांझ को भी धकियाने पर ही वापस जाता है पर छोड़ जाता है अपनी ऊष्मा। रेतीला सागर जो हवा और आँधी के साथ अपना रूप और रंग ही बदल लेता है ठीक जीवन की तरह। यह रेत ठहरी रहती है तो जल का भ्रम देती है और अंधड़ का साथ मिलते ही आसमान तक अपना कहर बरपा देती है। कहते हैं रेत के नीचे समुद्र था। जैसे कठोरता के नीचे भावुकता छिपी होती है। रेत जो सूरज के साथ सोना और चाँद के साथ चाँदी बन जाती है। दूर तक हवा के साथ खेल खेलती रेतीली धरती, अलग - थलग बने कटीली झाड़ियों में छूपे घर, रेत पर ऊँटो के काफिलों के पैरों के स्पष्ट निशान, मानव को गहराई से सोच कर कदम रखने की प्रेरणा देते हैं। रेत हमारी जिजीविषा को चुनौती देती है।

रेतीली धरा
भ्रमजाल रचाती
देती चुनौती।

- डॉ. नीना छिब्बर
17/653, चौपासनी हाऊसिंग बोर्ड
जोधपुर - 342008

मांउटेन मैन

परिवार के साथ बिहार राज्य के गया जाने का कार्यक्रम बना ये यात्रा केवल पर्यटन के उद्देश्य से नहीं बल्कि अपने पुरखों के प्रति कर्तव्य निर्वहन के उद्देश्य से थी। हम महा बोधी एक्सप्रेस से बोधी गया के लिए चल पड़े, राह भर न जाने कितने वृक्ष इस यात्रा में हमारे साथ शामिल होने के लिए ट्रेन से रेस लगा रहे थे लेकिन वो सारे पेड़ पीछे छूट गये। दूसरी तरफ चाँद था जो धीरे-धीरे हमारे साथ चल रहा था और पूरी यात्रा में साथ रह कर कह रहा था जीत के लिए गति से ज्यादा निरंतरता आवश्यक है।

ट्रेन के साथ
वृक्ष लगाते रेस
जीतता चाँद।

गया फल्गू नदी के तट पर अपने पुरखों को मोक्ष के उद्देश्य से धार्मिक अनुष्ठान के उपरान्त हम बोधी गया मंदिर के दर्शन को चल पड़े। मैं भगवान बुद्ध प्रतिमा की अलौकिक सुंदरता को अपलक निहारती रही। भगवान बुद्ध के अद्भुत तेज के आगे बचपन से मस्तिष्क में चल रहा प्रश्न - 'बुद्ध के सर पर घुंघराले केश हैं या 108 घोंघो का समूह' धुंधला पड़ गया।

धर्म और ज्ञान की पूर्णता प्रेम है और हम अपनी यात्रा को पूर्णता प्रदान करने के लिए प्रेम के प्रतीक दशरथ मांझी स्मारक की तरफ चले, वास्तव ही जिसे मांउटेन मैन की उपाधि दी गयी है वो कितने सामान्य व्यक्ति हैं लेकिन प्रेम ने इस उन्हें असाधारण बना दिया। हम भी प्रेम की शक्ति को आत्मसात कर साधारण व्यक्ति किंतु असाधारण व्यक्तित्व दशरथ मांझी को नमन कर वापस लौट आए।

अरि का दंभ
संकल्प हथौड़े से
तोड़ा मांझी ने।

- प्रतिभा त्रिपाठी

प्रकृति का संरक्षण

बीस वर्षों के बाद एक बार पुनः शिलौंग की यात्रा का कार्यक्रम बना। पुरानी यादें संजोये, उत्साहपूर्वक चेरापूँजी के लिए रवाना हुए। रास्ते भर वो खनिज पदार्थों के ऊँचे पहाड़, बादलों से ढके घने जंगल ढूँढते ही रह गए। पर हाय ! प्रगति के नाम पर , प्रशासन की नाक के नीचे हो रहे प्रकृति के दोहन और खनिजों की चोरी देख मन विचलित हो गया।

इंसानी वार
प्रकृति का संहार
दुखी संसार।

दूसरे दिन सैक्रेड फारेस्ट जाने का प्रोग्राम बना। जैसा कि नाम से विदित है, ये एक अद्भुत, प्राकृतिक संपदा की मिसाल, औषधीय जड़ी बूटियों के बरसों पुराने पेड़ पौधों का पावन जंगल था, साथ में गाइड , बाक़ायदा चेकिंग और हिदायतों के साथ भेजा गया कि इस जंगल से एक पत्ती भी तोड़ना वर्जित, अगर चोरी से कुछ भी उठाया तो न केवल आपका , वल्कि यहाँ की पूरी जाति का नाश हो जाएगा।

विशाल काय रुद्राक्ष का पेड़ ,नीचे टूटे पड़े रुद्राक्ष, सहसा उठाने को हाथ बढ़े पर तुरंत पीछे हट गए। मन में विचार आया कि एक भय दिखा कर अगर संरक्षण संभव है तो वो भी सही -

मानव मन
अनहोनी का भय
करे जतन।

- प्रतिमा प्रधान

मौन का गीत

सर्दी और हल्की बारिश का मिला जुला मौसम था । छत्तीसगढ़ के बीहड़ उदयपुर जनपद में विधानसभा मतदान हेतु मेरी ड्यूटी लगी हुई थी । मतदान कराने प्रथम बार सीतापुर से उदयपुर शाम को पहुँचना हुआ। उदयपुर का क्षेत्र मेरे लिए सर्वथा नया और अपरिचित था। रात को शरीर गर्म करने के लिए प्रशासन की ओर से अलाव की समुचित व्यवस्था की गई थी, इस कारण ठंड से काफी राहत मिल गई।

दूसरे और तीसरे दिन सुचारु रूप से मतदान संपन्न कराने के उपरांत मन हुआ कि रामगिरि की पहाड़ी भ्रमण करने के उपरांत ही वापसी करुँ। थोड़ी-थोड़ी बारिश होती रही फिर भी भ्रमण का लोभ संवरण न कर सका। रामगढ़ की दुर्गम पहाड़ी की ओर सुबह-सुबह आखिर अकेले निकल ही पड़ा । यहाँ के पहाड़ की हरियाली और बादलों की अटखेलियां देखते बनती हैं। प्रकृति की इन खूबसूरतियों में डूब गया था, मैं । तीसरी शताब्दी की यहाँ की सभी गुफाओं एवं इस दुर्गम रम्य पहाड़ी में प्रातःकालीन भ्रमण के अपूर्व आनंद का अनुभव मेरे लिए कम कौतूहल का विषय न था। इस अलौकिक भ्रमण से यात्रा की मेरी सारी थकानें मिट गईं -

शब्द स्वतः निकले ...

अजस्र प्रीत
गिरि कंदराओं में
मौन का गीत।

- प्रदीप कुमार दाश 'दीपक'

प्रकृति

भारत की नैसर्गिक छटा वास्तव में पूर्वोत्तर में प्राकृतिक रूप से फैली हुई है। सभी जगह सुपारी (तांबुल) के पेड़ और पान की लताएं नज़र आती हैं। प्रकृति इस पृथ्वी द्वारा दिया गया एक अमूल्य तोहफ़ा है। मैं उदयपुर (राजस्थान) से गुवाहाटी (असम) ट्रेन से सफर कर रही थी। बारिश की बूंद - बूंद नाच रही थी खेत भी लहलहाते हुए नाच रहे थे। मन तो बारिश में भीगने को अड़ा था। मेघ धमा चौकड़ी करते सूरज को आगोश में लिए प्रसन्न हो रहे थे। मगर सूरज कितनी देर ठहर पाते मेघों के आगोश में। निकलकर पश्चिम दिशा की ओर रुख कर लिया। धीरे-धीरे निशा की नीरवता में रहकर मौन ऊंचे-ऊंचे दरख्तों की शाखाओं में छुपा चांद धरा को सन्नाटे में निहार रहा था जो पसर गया था और तारे पहरा दे रहे थे चांद का। नींद मुझसे कोसों दूर थी। प्राकृतिक वातावरण गुदगुदा रही थी। निद्रा देवी ने कब अपने आगोश में ले लिया,भनक तक न लगी। रक्तिम आभा लिए फिर हुआ अरुणोदय। निशा अपनी काली चादर लिए सिमट गई।उदय हुआ दिनचर्या का कोलाहल। प्रातः कालीन ऊषा की लालिमा से रंजित ओस बिंदु से मंडित हरियाली, वृक्षों की ऊंची ऊंची शाखाएं तथा आकाश में उड़ते पक्षियों को देखकर सहसा ही मन मयूर नृत्य करने लगता है। हम अपने गंतव्य पर पहुंच कर प्रकृति का आनंद अनुभव कर रहे थे जो कल्पना से परे था।

मन चाहता
एक पंछी बनना
नभ को छूना।

- पूनम भू उदयपुर (राजस्थान)

तरंग

भगवान श्री बांके बिहारी जीके दर्शन का आकर्षण मुझे सदैव से वृंदावन की ओर खींचता था जब मुझे वहां जाने का अवसर मिला तो मेरा रोम रोम खिल उठा खुशी से स्वत: ही मेरे नेत्रों से अश्रु छलकने लगे।

अगले दिन हम वृंदावन की ओर चले, राह में अनेक वृक्ष पुष्प वल्लरी पुलकित होकर वसुधा का पुष्पों से श्रृंगार कर रही थी मयूर और शुक की वाणी सुनकर मन गदगद हो उठा कल कल करती श्यामल कालिंदी की तरंगित लहरें देख मन हर्षित हो उठा।

जब मैं मंदिर के मुख्य द्वार पर पहुंची सामने श्री बांके बिहारी की छटा के दर्शन किए उस पल लगा इस क्षण में मेरा सारा जीवन सिमट गया उन्हें अपलक निहारती रही अंतर्मन मैं तरंगे उठती रही मैं आनंद रस से सराबोर हो गई आज जीवन धन्य हो गया।

प्रेमाश्रु झरें
आनंद अनुभूति
कृतार्थ जीव।

- प्रमोदिनी शर्मा

रेत का समंदर

डेजर्ट नेशनल पार्क में पोस्टिंग हुई। राज्य पक्षी गोडावण और लुप्तप्राय पक्षी खड़मोर को कैमरे में कैद करने की इच्छा जगी। अल सुबह अपने एक सहायक को साथ लेकर निकल पड़े रेतीले धोरों में । खूब भटके, छान-बीन की पर दोपहर तक निराशा ही हाथ लगी। पीने का पानी भी खत्म हुआ, गले सूख गए।भीषण गर्मी, छाया का नामोनिशान नहीं। मृगमरीचिका ही दिखाई दे रही थी, तभी दूर शंकूवाकार खींप की छत की बनी झोपड़ी दिखाई दी, पास में एक पेड़, जिसके नीचे खटिया पर कोई व्यक्ति बैठा नजर आया। जान में जान आयी। हम वहां पहुंचे, पानी पिया, खेजड़ी की छांव में आराम किया। वाह ! क्या दृश्य था.....

तपता थार
रेत का समंदर
खेजड़ी छांव।

- प्रवीण सिंह बी. सिन्दल

अन्तर्यात्रा

नीलाभ सागर की लहरें काले पत्थरों से टकरा कर अद्भुत गीत-संगीत सृजन करने में तल्लीन थी। मुग्ध नीलगगन में बादल उन्मुक्त हो थिरक उठे। नीचे सुरम्य उपवन में कहीं ऊँ तो कहीं कृष्ण और शिव की मूर्तियाँ आध्यात्मिक चेतना जागृत करने में सक्षम थीं। यहाँ-वहाँ प्रबुद्ध जन पुस्तक पढ़ने या ध्यान में मग्न थे।

पांडिचेरी यात्रा में महर्षि अरविन्द गेस्ट हाउस की बालकॉनी में बैठे हुए मन वीणा के तार झंकृत होने लगे। धीरे-धीरे सहज शान्ति की प्रज्ज्वलित लौ से अंतर्मन दिव्य आलोक से भर गया। मैं , मैं नहीं रही। हाँ , जीवन की आपा-धापी से दूर इसी की तलाश में तो यहाँ लोग आते रहे हैं।

चैतन्य नाद
अन्तर्यात्रा में कहाँ
राग-विराग।

- पुष्पा सिंघी

बस एक याद

इस नए देश में - अनजाने शहर में - आए दो-चार दिन ही हुए थे।। लेकिन यहाँ के प्राकृतिक सौन्दर्य ने मुझे इतना आकर्षित किया कि यहीं बस जाने का मन होने लगा। परंतु यह बात मैं भी जानती हूँ कि यहाँ बस जाना संभव नहीं। आखिर इस शहर को अलविदा कहने का वक्त आ गया। घरवालों ने मुझसे कहा – पैकिंग कर लो और ध्यान रखना, कुछ छूट न जाए, कुछ रह न जाए ! कुछ समय बाद हम उस देश को छोड़कर निकल पड़े। परंतु सफ़र के दौरान मुझे याद आया कि काफ़ी कुछ वहाँ रह गया है। छूट गया है । वहाँ रह जाने वाले सामानों की फ़ेहरिस्त लंबी थी...

सागर की लहरों का वह संगीत वहीं छूट गया था जो सुबह-शाम कानों में गूँजा करता था। अथाह जल से भरा वहाँ का सागर शायद कुछ कहने की कोशिश करता था और मैं उसे समझने की कोशिश करती थी उसे मैं थोड़ा समझी, ज्यादा न समझ सकी। उस सागर की कही-अनकही बातें भी वहीं रह गयी थी । उस अनजाने देश के लोगों की अनजानी भाषा, उनकी संस्कृति को समझने की वह चाह वहीं छूट गई। बहुत दिनों के बाद ढेर सारी गौरैयाँ वहाँ एक साथ देखने को मिली थीं, उनका फुदकना और चीं-चीं करते हुए चुग्गा मुँह में भर लेना... उन गौरैयों का झुंड भी वहीं छूट गया था।

पहाड़ों से खेलते बादल भी वहीं रह गए .... अब वैसे बादल पता नहीं कब और कहाँ मिलेंगे? बारिश की बौछारों ने वहाँ मुझे जमकर भिगोया था। तन को तो सुखाकर मैं यहाँ चली आई । लेकिन भीगा हुआ मन तो वहीं रह गया.... छूट गया !

दे गया मुझे
वो अंजान शहर
अपनापन।

- डॉ. पूर्वा शर्मा

यात्रा

मुझे आज भी याद है वो वाकया जब हम, कनाडा में मासकोका नामक खूबसूरत और छोटे से एक ज़िले से वापस अपने घर लौट रहे थे, कि रास्ते में, उल्टी तरफ़ से आनेवाली एक गाड़ी खड़ी दिखाई दी, जिसके बाहर, एक गोरी युवती खड़ी थी, जो कि काफ़ी परेशान दिख रही थी। उसके कुछ दूरी पर सड़क के बीचोबीच बड़ा सा कुछ पड़ा हुआ देखकर हमने भी अपनी गाड़ी रोक दी। उतर कर देखा तो एक बहुत बड़ा और बूढ़ा कछुआ सड़क पार करने की कोशिश कर रहा था, पर बुढ़ापे के कारण वो बहुत ही धीमी गति से चल रहा था। उस युवती को डर था कहीं वो कछुआ किसी गाड़ी के नीचे न आ जाए। थोड़े देर बाद, उस कछुए को बचाने के लिए, उसने अपना जैकेट उतारकर, उस कछुए के ऊपर डाल दिया। कछुआ अपने आप को बचाने की कोशिश करते हुए उस युवती को काटने के लिए कई बार गुस्से से अपना सर घुमाया। पर वो युवती बिना डरे कोशिश करती रही। तीन चार बार कोशिश करने के बाद, उसने अपने उस जैकेट के ऊपर से दोनों हाथो से कछुए को पकड़कर सड़क के दूसरे किनारे जंगल में छोड़ दिया। किसी ने सच ही कहा है - "जहां चाह, वहाँ राह"।

सच्चे दिल से
अगर हो चाहत
मिलती राह।

- बन्दना गुप्ता
कनाडा

चाँदनी रात में नौका विहार

पिछले वर्ष जगन्नाथपुरी की यात्रा बहुत सुखद रही। भगवान जगन्नाथ जी के दर्शन के पश्चात हमें दूसरे दिन लौटना था लेकिन मन में चिल्का झील देखने की उत्कंठा बनी रही और हम शाम को ही चिल्का झील देखने के लिए निकल पड़े। जाते-जाते रात हो चुकी थी नौका विहार करने की हार्दिक इच्छा थी। बहुत मनुहार के बाद नाविक थोड़ी दूर तक नौका विहार कराने के लिए राजी हुआ और हमारी टोली नाव में सवार हो गई। आनंद की सीमा चरम पर थी, पूर्णिमा की रात और आकाश में खिला चांद पहले शांत झील में बिल्कुल चमकता गेंद की तरह दिखाई दे रहा था। जब नौका अपने वेग के साथ चलने लगी और पानी में हलचल के साथ ऐसा लग रहा था जैसे चंद्रमा और और झील आपस में क्रीड़ा कर रहे हो, सचमुच वह दृश्य इतना मनमोहक था कि आज भी मन उस लुभावने दृश्य को याद करता है।

नौका विहार
चन्द्र -जल का खेल
रात पूर्णिमा।

- मधु गुप्ता 'महक'

यूरोप टूर

'यूरोप टूर' 21 दिन की यात्रा पर हम बड़ी खुशी से निकले थे, परंतु यह यात्रा इतनी थकाऊ होगी उसका हमें अंदाजा भी नहीं था, क्योंकि रोजाना सुबह 8 से शाम को 8 बजे तक लगातार 12 घंटे घूमना, दिन भर लंबी-लंबी कतारों में खड़े रह कर सभी दर्शनीय स्थलों को देखना बहुत मुश्किल लग रहा था, फिर भी मन बना कर हम खुशी से यात्रा कर रहे थे। अपनी यात्रा में आनंद भी आने लगा था,परंतु अचानक स्वीजरलैंड की एक बर्फीली पहाड़ी पर मेरे पाँव में फ्रेक्चर हो गया। पहाड़ी से लंबा रास्ता तयकर बड़ी मुश्किल से हम फर्स्ट एड के लिए डॉक्टर के पास पहुँचे। उन्होंने मेरे पैर को देखकर बताया कि एंकल फ्रेक्चर हो गया है। फर्स्ट एड लेने के बाद टूर गाईड ने वापसी के टिकिट बनाने की राय दी, जो हमें मंजूर नहीं थी। हमने जब कोई और रास्ता निकालने की बात कही तो उन्होंने एक व्हील चेयर लेकर साथ सफर में बने रहने की दूसरी सलाह दी जो मुश्किल तो लग रही थी फिर भी हमें वही राय ज्यादा पसंद आयी। यूरोप में व्हीलचेयर से यात्रा करने वाले और उसे ले जाने वाले एक व्यक्ति को विशेष सुविधा दी जाती है बिना लाईन में खड़े हुए हर जगह आगे स्थान दिया जाता है। उन लोगों के लिए विशेष लिफ्ट की सुविधाएं उपलब्ध करवायी जाती है। इस तरह फ्रेक्चर के बावजूद यात्रा में हम दोनों पति पत्नी को वो सभी सुविधाएं मिली। मोनालिसा की पेंटिंग हो या कोहिनूर का हीरा लोगों को घंटों लाईन में खड़े रहकर देखना होता था वहां हम लोग सबसे आगे कुछ मिनटों में देखकर आ जाते थे। ऐसे ही खरीदारी के समय मॉल में भी बिना लाईन की प्रतीक्षा किये पेमेंट कर आ जाते थे। लंबे सफर के दौरान जहाँ हमारे साथ यात्रा करने वाले लोग बहुत थक रहे थे वहीं हम उस यात्रा का पैर में दर्द होने के बावजूद आनंद लेने लगे।

यूरोप टूर
बिना थकान पूरा
दुख में सुख।

- मधु सिंघी

नर्मदा के तीर

विद्यार्थी जीवन में मेरा एक बार जबलपुर, मध्य प्रदेश, परीक्षा देने जाना हुआ। मैं अपने भैया के साथ ट्रेन से जबलपुर पहुंचा। ट्रेन सुबह ही पहुँच गयी । परीक्षा के लिए अभी बहुत समय था। मौसम बड़ा ही मनोरम था। बासंती हवा से तन-मन प्रफुल्लित था। हमने भेड़ाघाट घूमने का निर्णय लिया। हम भेड़ाघाट की ओर रवाना हुए । कुछ देर बाद आटो वाले ने हमें वहाँ पहुँचा दिया। माँ नर्मदा के चरणों में पहुँच कर हमें असीम आनंद प्राप्त हुआ। धुंआधार जलप्रपात की नैसर्गिक सुषमा अत्यंत मनोरम और रमणीय है। कल-कल करती नर्मदा मैया के दुग्ध सदृश जल ने हमें मंत्रमुग्ध कर दिया। हमने वहाँ स्नान-ध्यान भी किया। माँ के चरणों में नमन कर हम अपने गंतव्य की ओर चले गए। वह अलौकिक दृश्य आज भी मेरे मानस पटल पर अविस्मरणीय रूप से अंकित है –

धुओं के बीच
दूधिया जल गिरे
नर्मदा तीरे।

- मनीष कुमार श्रीवास्तव
भिटारी, रायबरेली (उ.प्र.)

जीने की चाह

बारिश से भीगी सडकें। सडकों के किनारे फूल- पौधों-बेलों के गमलो से सजी दूकानें। पेड़-पौधों की हरियाली में घिरे छोटे-छोटे घर। प्रत्येक घर का मुख्य द्वार वृक्षों से सुशोभित ।कठोर काले पत्थरों के बीच कठिन श्रम से हृदय की स्वच्छता को भी धवल कर देने वाली मुस्कराहट से स्निग्ध आत्मविश्वास से परिपूर्ण चेहरे । कोमल-कोमल एहसासों की वाणी में तरलता।स्थापत्य कला में बौद्ध संस्कृति की झलक । साफ-सुथरी, धुली-धुली-सी सडकों पर कब कोहरा छा जाये,कब धूप निकल आये और कब वारिश हो जाये, हम जैसे यायावर को पता नहीं होता,उनको जैसे सब मालूम होता, फिर भी उनका जीवन- प्रवाह कितना सरल और कितना सहज !

एक ओर प्रकृति, दूसरी ओर उसकी और भी सुन्दर अनुकृति ! प्रकृति के साथ मनुष्य के सामंजस्य को उद्घाटित करने वाली कला वीथिका ! चटख रंगों के सुन्दर-सु दृश्य मिश्रण के साथ प्रकृति और प्राणियों की विविध भंगिमाओं का सुन्दर चित्रण! रंगों की घुमावदार रेखाओं में प्राणियों की सांकेतिक आकृतियाँ! भारत की सनातन संस्कृति ही मानो बाली में अपने अनुपम सौन्दर्य का प्रदर्शन कर रही थी । प्रत्येक मुख पर अलौकिक सन्तोष और आकर्षक प्रसन्नता विराजमान! लगने लगा जैसे जीने की कला के सभी छोर, एक-दूसरे से बंधे हुए जीवन्तता का मधुर सन्देश दे रहे हैं !

हुआ जीवन्त
मन की साधना से
प्रेम का तन !

- डॉ. मिथिलेश दीक्षित

जिजीविषा

गहरी और पारदर्शी नदी में उगे सरपट के बीच से गुजरते हुए मोटर बोट रवाना हुई। नदी किनारे बांस के मंडप और नारियल के पेडों झुरमुटों की ओट में लाल फ्लोटिंग बोट्स ऐसे लग रही मानो प्रकृति की गोद में नन्हे शिशु बैठे हो। अनेक प्रजाति के जलीय पक्षी और वनस्पतियों को हम कुतूहल से निहार रहे। नाविक बोला "सामने देखो मैम.. यहीं पूवर बैक वॉटर पॉइंट हैं।" सचमुच उस अद्भुत दृश्य देख रोंगटे खड़े हो गए। अरब सागर से उठती दो मीटर ऊँची लहरें नदी की धार को पीछे धकेल रही और नदी सिमट कर बहुत गहरी व चौड़ी हो रही हैं। यह देख मैंने नाविक को कहा "ले चलो जल्दी वापस, नहीं तो ये लहरें नांव पलट देगी।" नाविक बोला " मैम ! हमें तो आदत है, इन्हीं तूफानी लहरों के रोमांच और खतरों को देखने इस डेल्टा पर लोग उतरते हैं। हम डर जायें तो हमारे बच्चे कैसे पलेंगे।" मेरे भय को भांप नाविक ने बोट दूसरे रास्ते की ओर मोड़ दी।

केरल के जंगलों के अपूर्व सौंदर्य के स्मृति चिह्न मन में लिए हम वापस लौट आये। मन में कुछ सुकून की छाँव थी तो कुछ दर्द की सिहरन..

पेट की क्षुधा
खतरों से जूझती
जीवन इच्छा।

- मीनाक्षी कुमावत 'मीरा'

स्मृति

'आए थे हरि भजन को ओटन लगे कपास'। इस कहावत को अक्सर चरितार्थ होते हुए देखा है पर अगर इसे उल्टा कर दें तो यह होगा ' आए थे ओटन कपास को करने लगे हरि भजन' यह और भी खूबसूरत हो जाता है। अक्सर किसी और उद्देश्य से हम यात्रा पर निकलते हैं लेकिन अगर उस यात्रा में हमें ऐसा कुछ मिले जिसकी हमने कल्पना न की हो तो समझ लीजिए अहोभाग्य।

इटावा से कानपुर, कानपुर से लखनऊ, बस की यात्रा सुखद थी पर लखनऊ से सीतापुर की कार द्वारा यात्रा चिरकाल के लिए स्मृतियों में कैद हो गई। यात्रा के दौरान भीमराव अंबेडकर पार्क, गौतम बुद्ध पार्क और लखनऊ की नजाकत देखने को मिली इसके बाद सीतापुर की यात्रा प्रारंभ हुई और हम नैमिषारण्य पहुंचे। वहां की हरितिमा देखते ही बन रही थी। पीपल, बरगद, आम, नीम, शीशम अर्जुन, सागौन आदि सभी पेड़ नैमिष अरण्य को साकार स्वरूप दे रहे थे। यूकेलिप्टस के पेड़ आकाश से बातें कर रहे थे। आम के वृक्ष हमसे जैसे कह रहे थे कि ठहरो थोड़ी देर मेरी छांव में बैठो। वहां की हरीतिमा नैमिषारण्य की सुंदरता में चार चांद लगा रही थी। गोलाकार सरोवर चक्रतीर्थ देखा जिसका अपना विशेष महत्व है।

मूक भाषा में
करती है प्रकृति
हमसे बातें।

- डॉ. मंजू यादव 'मृदुल'
'काव्य कुटी' गोपाल मंदिर के पास
लोहिया नगर, बकेवर,इटावा (उ.प्र.)
पिन – 206124

मखमली यादें

कश्मीर प्रवास के दौरान सोनमर्ग और गुलमर्ग में बर्फ की अठखेलियां कर हम थक चुके थे, डल झील के शिकारे की ठिठुरन में हम जम चुके थे, अब तलाश थी ऐसी जगह कि जहां हरी भरी वादियां हों और नर्म, कुनकुनी सी धूप भी। तो चल पड़े हम पहलगाम। सड़क के दोनों तरफ लाल हरे सेबों से लदे पेड़, जैसे पेड़ों ने रंगबिरंगे झुमके पहन रखे हों। रास्ते में लिद्दर नदी का उच्छृंखल प्रवाह । नदी का अमृत तुल्य मीठा जल, जैसे हमारी जन्मों की प्यास बुझ गयी। यहीं से अमरनाथ गुफा की यात्रा शुरू होती है, उस पवित्र स्थल के दर्शन के पश्चात हमने भी घोड़े से अपनी सैर शुरू की। चढ़ाई एकदम खड़ी थी, और पगडंडियां बड़ी बेतरतीब। पहलगाम देखकर यही लगा जैसे किसी ने हिमालय की ऊंचाई पर हरे रंग का एक विशालकाय कटोरा रख दिया हो।

कच्ची धूप से सराबोर हरी हरी घास पर लेटना जैसे प्रकृति की गोद में चिर विश्राम था। मेरी नींद तब खुली जब हाथों पर, सीने पर कुछ नर्म सा अहसास हुआ। देखा तो कुछ लोकल कश्मीरी महिलाएं, छोटे छोटे खरगोश और मेमने लेकर आई थीं और लोग उन्हें गोद में लेकर तस्वीर खिंचा रहे थे। कहना कठिन है कि ज्यादा खूबसूरत और मासूम वे पहाड़ी महिलाएं थीं या वे पहाड़ी जानवर। पहलगाम की वह मखमली खूबसूरती आज भी मेरे हृदय की एक अविस्मरणीय याद है।

बर्फ का प्याला
हरी कुंवारी धूप
पहाड़ी बाला।

- राकेश गुप्ता

बेचैन मछलियाँ

वर्ष 2020 व 2021 में सिरोही जिले में लगातार मॉनसून की बेरुखी रही। जिले के अजारी में मार्कण्डेय ऋषि की तपस्थली है। जहाँ मारकुण्डेश्वर धाम व सरस्वती जी का अति प्राचीन मंदिर है। मंदिर के सामने से एक सरिता बहती है । ग्रामीण परिवेश, रास्ते में दोनों तरफ हरे भरे खेत बहुत सुन्दर दिखाई देते है। मंदिर के आसपास चारों और बहुतायत में खजूर के उँचे-उँचे, हरे-भरे पेड़ उस स्थान को रमणीय बना देते हैं। बरसात की कमी व अति जल दोहन के कारण मारकुण्डेश्वर धाम में सदा बहने बहने वाली बारहमासी नदी सूखी पड़ी थी। मॉनसून आने में देर थी। मंदिर के सामने कुण्ड में बहुत थोड़ा सा पानी बचा था। जिसमें मछलियां बेचैन हो रही थीं। नजारा देख कर मन बेचैन हुआ।

प्रभु की लीला अपरम्पार है। तीन चार दिन बाद बंगाल की खाड़ी में उठे चक्रवाती तुफान के कारण पानी सूखने से पहले इस क्षेत्र में अच्छी बारिश हुई। कुण्ड में पानी भर गया और मछलियां फिर से अठखेलियां करने लगी।

भरा कासार
ग्रीष्म में प्यासी मीन
मिली जिन्दगी।

- राजेन्द्र सिंह राठौड, सिरोही

दिव्य आभा

नैनीताल से अल्मोड़ा वैसे एक बार जा चुका था, किन्तु आज शिवरात्रि है, दिल में एक उद्देश्य के साथ सुबह से अल्मोड़ा के लिए निकला। सड़क के एक और विशाल पर्वत श्रंखला और दूसरी ओर गहरी खाई में बहती नदी अनुपम सौंदर्य बिखेर रही थी। आगे बढ़ते ही सड़क और नदी एक साथ बहने लगी। यह ऐसा दृश्य था कि आँखें हटाने का मन ही न हुआ और रुक कर सुंदरता आँखों से पीने लगा। किन्तु स्मरण आते ही बढ़ लिया तथा शीघ्र ही अल्मोडा के सर्किट हाउस पहुँच गया, जो ऊँची पहाड़ी पर एक सुरम्य वाटिका की तरह है। चारों ओर दूर - दूर तक सुन्दरता बिखरी पड़ी है। आकाश में हल्के बादलों के साम्राज्य के साथ वर्षा भी शुरू हो गई, जो शिवरात्रि के दिन हिमालय दर्शन की हम लोगों की इच्छा पर कुठाराघात कर रही थी। थकान व निराशा के वशीभूत झपकी आ गई। किन्तु आँखें फटी की फटी रह गईं जब चौकीदार बड़ी ट्रे में 'नगाधिराज' को लेकर खुली खिड़की के समझ खड़े होकर कह रहा था, साहब, चाय लीजिए , मौसम खुल गया है।

खिड़की से हिमालय अपनी पूर्ण विराटता और दिव्य आभा के साथ मेरी आँखों के सामने खड़े होकर जैसे कह रहा हो, देवों के देव महादेव किसी को निराश नहीं करते। एकटक हिमालय को तब तक निहारता रहा, जब तक सूर्य की किरणें हिमालय पर अठखेलियाँ करतीं रहीं। मेरे कानों में शिव तांडव स्तोत्रम् के डमरू का स्वर गूंजता रहा-

डमड्डमड्डमड्डमन्निनादवड्डमर्वयं
चकार चण्डताण्डवं तनोतु नः शिवः शिवम्।

मैं मन्त्रमुग्ध स्थिति में कब तक रहा, मुझे याद नहीं परंतु आज ४५ वर्ष बाद भी मुझे उस दिव्य घटना का स्मरण कराता है -

हिम दर्शन
कर गया झंकृत
बावरा मन।

- राधाबल्लभ अग्रवाल
नई दिल्ली

भागते पथ

माउन्ट आबू पर्वत पर चढ़े तो 'गुरु शिखर' दिखाई पड़ा। सभी गाड़ियाँ बड़ी तेजी से संकरे एवं घुमावदार मार्ग से गुरु शिखर की चढ़ाई कर रही थीं। मार्ग में गहरी घाटियाँ दिल की धड़कन तेज कर रही थी। अनजाने उन्नत शिखर दिल में उर्जा एवं प्यार भर रहे थे। इसी शिखर पर खोखले पत्थर की शिलायें अपना इतिहास व्यक्त कर रही थीं। पथ के अगल-बगल शहर बसा ऐसा लग रहा था कि जैसे पेड़ पौधे भाग रहे हैं। पश्चिमी आकाश में होठों की लालिमा विद्यमान हो रही है। बगल में नीला जल मौन साधना में लीन है। पथ भाग रहा है। एकाकी मैं महसूस कर रहा हूँ कि पेड़-पौधे तो स्थिर रहते हैं सिर्फ मेरे मन से बिंब टकरा रहे हैं।

पथ भागते
खामोश है शहर
बिम्ब बाँचते।

- रामनिवास पंथी
डलमऊ - रायबरेली (उ.प्र.)

नर्मदा के तीर

मध्यप्रदेश में स्थित जबलपुर के पास मंडला शहर है। मैं दीदी से मिलने बस में प्रवास पर जा रही थी। बारिश का मौसम था। मनोरम दृश्य। पहाड़ के बीच घुमावदार सड़क, घाटियां, हरे-भरे पेड़, मन्द-मन्द समीर। मन को रोमांचित कर रहे थी। रास्ते में बस के सामने से गुजरते मोर, खरगोश, जंगली भैंस दिखाई दे रहे थे।

घर पहुँचते शाम हो चली। रात को साँय साँय की आवाज से भयभीत हो गई। दीदी ने कहा यह आवाज नर्मदा के जल की है जो उफान पर है। बारिश हो रही थी। सबेरे दीदी से मैंने नर्मदा देखने का आग्रह किया और हम दोनों कुछ ही दूरी पर स्थित नर्मदा किनारे पहुँच गये। कुछ आदिवासी जान जोखिम में डाल कर नदी के बहाव में आये लकड़ियों को खींच रहें थे। पूछने पर पता चला कि वे लोग पेड़ नहीं काटते बल्कि बारिश में नदी के बहाव में पेड़ की लकड़ियां साल भर के ईंधन के रूप मे जमा करते हैं।

मैं सोचने लगी कि हमारे शहर में तो प्रगति के नाम पेड़ काटे जाते हैं और ये आदिवासी लोग अनपढ़ होते हुए भी हमसे कितने शिक्षित हैं। वे निसर्ग की रक्षा करना जानते हैं। ये सोचते हुए हम घर लौट आए।

निसर्ग रक्षा
करते आदिवासी
नर्मदा तीर।

- रूबी दास

महाबलेश्वर की घाटी

सुरम्य वादियों से घिरा महाबलेश्वर सातारा जिले का एक सुंदर रमणीय स्थल घूमने का अवसर मिला। महाबलेश्वर पश्चिमी घाट के बीच बसा एक पहाड़ी स्थल मई माह की भीषण गर्मी में भी राहत दे रहा था, महाबलेश्वर कृष्णा नदी का उद्गम एक हिंदू तीर्थ स्थल भी है, यहां मेप्रो में स्ट्राबेरी के बगीचे और ताजे फलों का रस आनंदित कर गया, शहर के कोलाहल से दूर महाबलेश्वर का शुद्ध पर्यावरण लोगों को बरबस ही आकर्षित कर लेता है, हम महाबलेश्वर से लौट तो आए पर मन वहीं छोड़ आए।

घाटी सुंदर
महाबलेश्वर की
मन मोहती।

- वृंदा पंचभाई

बादलों के ऊपर

पृथ्वी भारी और आकाश तत्व हल्का है। मानव मन की प्रवृत्ति भी ऐसी ही है। दुःख, चिंता, निराशा, ईर्ष्या का बोझ लादे मन भारी रहता है। प्रसन्न और निश्छल मन हल्का महसूस करवाता है।

शिमला पहुँचते ही ऊँचाई पर वातावरण में परिवर्तन का आभास हुआ। गगनचुंबी चीड़ और देवदार के वृक्ष बरसों से तपस्या लीन स्थिर खड़े थे। शिवालिक के उत्तुंग शिखर चौकन्ने हो प्रकृति की रक्षा में तत्पर दिखे। जाखू मंदिर से पूरा शिमला बेहद सुंदर दिख रहा था। पहाड़ों पर बसे घर और होटल दूर से किसी चित्रकार की कल्पना का बोध करवा रहे थे। अचानक मौसम ने करवट ली। न जाने कहाँ से बादलों का काफ़िला आया और रूई के फाहों की भाँति नीचे घाटी में सैर को चल पड़े। हम ऊपर और बादल नीचे। तेज़ बरसात में पेड़ पहाड़ वादियाँ स्नान करने लगे । मन उत्साहित और आनंद में डूबा हुआ किसी काल्पनिक दुनिया को अनुभव कर रहा था। यह ऊँचाई मन को बहुत भा रही थी। काश ! हम सब अपने आदर्शों को भी इस ऊँचाई पर ले आएँ !

ऊँचा उठना
सिखाते हैं बादल
जीने की कला।

- विद्या चौहान

हरिद्वार में माँ गंगा

पतितपावनी - कल्मषहारिणी माँ गंगा के शुभ दर्शन - मज्जन की बलवती इच्छा - पूर्ति के निमित्त चैत्र मासांत में हिंदुओं के पवित्र तीर्थ , प्रमुख आध्यात्मिक केन्द्र , प्राचीन सप्तपुरियों में एक हरिद्वार की यात्रा प्रारंभ करते ही मन में एक अलग ही छवि उभरने लगी। देशी - विदेशी श्रद्धालुओं , पर्यटकों को आत्मशांति देने वाला वह हरिद्वार जहाँ देवासुर संग्राम में समुद्रमंथन से प्राप्त अमृत - घट को ले जाने वाले धन्वन्तरि के द्वारा भूल से कुछ अमृत - विंदु गिर जाने के कारण हर बारहवें वर्ष महाकुंभ का आयोजन होता है।

उत्साह और उत्कंठा की स्थिति में जैसे ही हरिद्वार पहुँचा, गंगा जी के निकट शिवजी की भव्य विशाल मूर्ति ने लम्बी यात्रा की थकान पलभर में दूर कर दी। उषाकाल में प्राची दिशा भगवान भुवन भास्कर के स्वागतार्थ आरती सजाती हुई - सी लग रही थी। हरिद्वार के पावनतम घाट , जहाँ सश्रद्ध स्नान करने से मोक्ष - प्राप्ति मानी जाती है , हर की पौड़ी की ओर कदम बढ़े। ' गंगा मैया की जय ', ' हर - हर गंगे ', ' जय गंगे ' की रोम - रोम पुलकित करने वाली कभी एकल कभी समवेत ध्वनि से गुंजायमान मार्ग पर साधु - सन्यासियों तथा गृहस्थजनों की भीड़ , मंदिरों में शंख - घंटा नाद , मधुर स्वराभासित आरती । घाट पर पर्वतों से कलकल - छलछल प्रवाहित गंगा जी की स्वच्छ सु पावन - मनभावन धारा में आस्था की डुबकी लगाई, तो अनायास ही प्रस्फुटित हुए स्वर –

गंगे ! नमन
धवल जलराशि
मुदित मन।

- डॉ० विष्णु शास्त्री 'सरल'

सुनहरी स्मृति

बीस साल पहले, परिवार एवं मित्रों के साथ की सिक्किम यात्रा, मन मस्तिष्क पर अपना सिक्का जमाए हुए है। पेलिंग, प्रपातों एवं झीलों से सजी वादी जिसमें कंचनजंगा की विशाल श्रृंखला है। सुबह पाँच बजे ही हम सब प्रकृति के सुंदरतम दृश्य को देखने चले गए। संकरे रास्तों से चलती गाड़ी मानो फूंक फूंक कर कदम रख रही थी। जहां तक नजरें जाती, हरी भरी वादियां, ऊँचे पर्वत, आकाश से सिर टकराते नुकीले वृक्ष, झर झर झरते झरने अपना जादू चला रहे थे।

जब प्राची से रश्मियों ने खिलखिलाना शुरु किया, उनकी गूंज कंचनजंगा के उत्तुंग शिखर से टकराई। मिदास स्पर्श हुआ, पूरी पर्वत श्रृंखला, वादी और आसपास के पूरे क्षेत्र ने सुनहरा आवरण ओढ़ लिया। ओह! अप्रतिम ! ऐसा अनूठा सौंदर्य ! कंचनजंगा से टकराती किरणों ने जैसे पर्वत का नाम रोशन कर दिया। हृदय की गहराइयों में आज भी वह सुनहरी स्मृति चमक जाती है।

पोटली खुली
झरीं स्वर्ण मुद्राएँ
धरा समेटे।

- शर्मिला चौहान

स्वर्ग की अनुभूति

प्रभु की कृपा हुई और अचानक ही हरिद्वार जाने का सौभाग्य जगा पच्चीस भक्तों की टोली बनी और चल पड़े शांति कुंज हरिद्वार रास्ते में कई पड़ाव लिए मथुरा वृंदावन होते हुए पहुंचे ऋषियों की तपोभुमी नैमिषारण्य पवित्र सरोवर में स्नान कर ललिता देवी मंदिर दर्शन किए जो 108 शक्ति पीठों में एक है। तपोभूमि में बैठ कुछ घंटे हम सभी ने ध्यान लगाए, जिसमें बहुत ही सुखद अनुभूति हुई। जंगलों के बीच यह तपस्थली प्रभु का वरदान है। फिर सभी रात का भोजन कर निकल पड़े। दूसरे दिन भोर की बेला में पहुँच गए हरि के द्वार मानो ऐसा लगा कि सचमुच स्वर्ग पहुँच गए हों। सभी जगह मंदिर ही मंदिर प्रकृति के अनुपम दृश्य को देख मन हर्षित हो उठा। सबसे पहले हम सभी हरखी पेड़ी में गंगा स्नान कर शांति कुंज गए वहाँ हमने गायत्री परिवार के नियमों को जाना सुबह तीन बजे उठ कर जप तप पूजा हवन कर वहाँ से निकल पड़े मसूरी देहरादून के लिए वहाँ की सड़कें वाकई अंगड़ाई लेती हुई श्रृंखलाओं में पर्वत बर्फ के चादर से ढके हुए बादलों को चूमती हुई कहीं बारिस कहीं धूप और कही बादल मन को मोह रहे हैं। नुकीले नुकीले पेड़ पर्वतों की शोभा बढ़ा रहे हैं। प्रकृति को बहुत पास से जाना वहाँ हिमालय से आती चंदन जैसी दिव्य खुसबू हवाओं संग निरंतर बहती रहती, हमें वापस भी होना था खूबसूरत नजारों को नैनो में भर कर वापस हो आये, परंतु मेरा मन आज भी उस सौंदर्य को याद कर कह उठे –

हरि के द्वार
स्वर्ग की अनुभूति
सुख अपार।

- स्वाति गुप्ता 'नीरव'

ईश्वरीय करिश्मा

चार दिन पहले मैं बस से अपने मायके जा रही थी। मेरे बगल वाली सीट पर मैंने देखा कि एक दंपत्ति बैठे हैं और बहुत परेशान हैं। वे दोनों आपस में कुछ बातें कर रहे थे। मैंने पूछा भाई क्या बात है उन्होंने बताया कि बहन जी आपको तो पता ही है कि पिछले कुछ दिनों से बहुत भीषण गर्मी पड़ रही है। गर्मी के कारण मेरे खेत की फसल सूख गई है। अब अगर कुछ दिन और वर्षा नहीं हुई तो फसल खराब हो जायेगी। मैंने कहा कि आप ईश्वर पर भरोसा रखो सब अच्छा ही होगा। और सचमुच ईश्वर का करिश्मा तो देखो बिपरजोय चक्रवात के कारण कल रात झमाझम बर्षा हुई। मैं लौटते समय बस स्टैंड पर खड़ी खड़ी सोच रही थी कि अब उस व्यक्ति की फसल को जीवनदान मिल गया होगा।

बरसी बूंदें
खेतों को मिल गया
जीवन दान।

नदियां ताल
झरना जलाशय
है मालामाल।

- सुनीता दीक्षित 'श्यामा'
इटावा

आसमान में सीढ़ी

महानगर के जंगल में, अपार्टमेंट्स रूपी वृक्षों पर फ्लैट के घोंसले में रहने को विवश आज का बचपन जमीन और आसमान दोनों के सुख से वंचित-सा हो गया है। आज उसे वह अल्हड़ आनंद कहाँ, जो हमने आम-अमरूद के बाग में चुपके से कच्चे फल तोड़कर भागने में पाया। बरसात में कागज की नाव बनाने के लिए कापी के पेज फाड़ना तथा रात में छत पर खुले आसमान के नीचे लेटकर चंद्रमा पर चरखा कातती बुढ़िया की कहानियाँ सुनने का सुख बचपन की अमूल्य निधि है। उम्र के पहाड़ पर चढ़ते-चढ़ते मन जब-तब फिसल कर बचपन की ओर चला जाता है अतीत की ओर ये फिसलन मन को गुदगुदा देती है। आज भी जब मैं अपनी छत पर जाती हूँ और आसमान को देखती हूँ, तो बचपन की उस कल्पना को याद करके हँस पड़ती हूँ, जब मैं अकसर सोचा करती थी कि आसमान कितना ही ऊँचा क्यों न हो, यदि हम बहुत-सी सीढ़ियों को जोड़कर एक लम्बी-सी सीढ़ी बना लें, तो क्या आसमान तक नहीं पहुँच सकते। माँ हँस कर कहती- "हम अपने कार्यों से आसमान छू सकते हैं।" अबोध मन की यह कल्पना कहीं न कहीं मन के किसी कोने में आज भी पल रही है।

किस्से-कहानी
चाँद-सितारे भूला
महानगर।

- डॉ. सुरंगमा यादव

पचमढ़ी यात्रा

सतपुड़ा की रानी से मिलने का बहुत मन था, हरी भरी मुस्कुराती, मन को भाती रानी, हरियाली और वन्य जीवों से परिपूर्ण सतपुडा के घने जंगलों के मध्य पंचमढी अत्यंत सुंदर और मोहक स्थान है। हरे-भरे पहाड़ों के बीच में से कलकल बहता पानी, अनगिनत झरने, कहीं साल के घने जंगलों के बीच में खुले खेत, बांस व जामुन के बगीचे और लाल मिट्टी पचमढ़ी की खास पहचान है।

आखिर अपने को रोक न सका और चल दिया सतपुड़ा की रानी से मिलने, सुबह पांच बजे अरुणोदय की लालिमा से युक्त आकाश जंगलों के हरे-भरे, टेढ़े-मेढ़े रास्तों के बीच, अपना दिल तो आवारा न जाने किस पे आएगा गुनगुनाते हुए हम पचमढ़ी सुबह आठ बजे पहुंचे, चाय नास्ते के बाद हम रानी से मिलने निकल पड़े निकल पड़े सबसे पहले हम पांडव गुफा पहुँचे, पहाड़ी पर बड़ी से चट्टान में बनी हैं ये पांच गुफाएं जिन्हें पांच पांडवों के नाम से जाना जाता है। इन पांच मढ़ियों से ही पचमढ़ी को अपना यह नाम मिला है । जंगलों और पहाडियों के लिहाज से रीछगढ़, हांडी खोह, पवित्र महादेव, छोटा महादेव, चौरागढ़, जटाशंकर पचमढ़ी के प्रमुख दर्शनीय स्थल हैं। ये सभी स्थान मुख्य रूप से शिव की आराधना से जुड़े हुए हैं। लेकिन सभी प्राकृतिक रूप से बेहद खूबसूरत हैं। चट्टानों व पत्थरों के बीच से बहता रजत प्रपात यानी बिग फॉल और उसकी तलहटी में बना अप्सरा विहार और खड़ी व मुश्किल उतराई वाला जलावतरण यानि (डचेस फॉल) यहां के मुख्य प्रपातों में एक हैं। इरिन पूल, सुंदर कुंड (सांडर्स पूल), त्रिधारा (पिकर्डिली सर्कस), देनवा धारा पर वनश्री विहार (पेनसी पूल) व संगम (फुलर्स खुड) प्रमुख हैं। और अंत में सतपुड़ा की सबसे ऊँची चोटी धूपगढ़ से सूर्यास्त का नज़ारा देखकर हमारी सतपुड़ा की रानी से मुलाकात संपन्न हुई किन्तु उस मुलाकात की स्मृतियाँ आज भी हमारे मन में गहरी अंकित हैं।

निर्मल रूप
सतपुड़ा की रानी
शिव सानिध्य।
- सुशील शर्मा

कश्मीर की खूबसूरती

"अगर फिरदौस बर-रु-ए ज़मीं अस्त, हमीं अस्त ओ हमीं अस्त ओ हमीं अस्त"

कश्मीर की खूबसूरती के लिए कहे गये अमीर खुसरो के ये शब्द कभी, कहीं पढ़े थे, परंतु चाहते हुए भी कश्मीर जाने का संयोग अब तक नहीं बन पाया था। आज बहुत खुशी थी दिल में, कि चलो बहुत समय बाद कश्मीर जाने की यह तमन्ना पूरी होने जा रही है।

बहरहाल, श्रीनगर पहुँच कर डल झील में हाउसबोट पर रुकना और झील में बोटिंग, बहुत ही रोमाचकारी अनुभव था। उसके बाद पहलगाम जाना हुआ। वहाँ से घोड़ों पर गुलमर्ग। मार्च के महिने में उम्मीद तो नहीं थी, लेकिन स्नो फॉल का मिलना सोने पर सुहागे जैसा था।

पहलगाम से वापिस श्रीनगर लौटने पर कश्मीरी शालें अखरोट, केसर खरीदना भी हुआ। हमें पता चला कि इस बार ट्यूलिप गार्डन टूरिस्ट के लिए तय समय से कुछ दिन पहले ही खोल दिया गया है। यह भी हमारी खुशनसीबी कहिये कि इतना खूबसूरत इत्तेफाक हो गया और ट्यूलिप गार्डन भी देखना हो गया। सचमुच अमीर खुसरो ने कश्मीर के लिए जो कहा, वह सही कहा।

बर्फ़ ही बर्फ़
जन्नत से नज़ारे
ये कश्मीर है।

- संतोष बुधराजा

अमरकंटक : एक यादगार सफर

रोजमर्रा के जीवन में एक जैसी दिनचर्या तन-मन को थका देती है। प्रतिदिन की वही भागम भाग वाली जिंदगी। जीवन में कोई उमंग और उत्साह ही नहीं। ऐसा लगने लगा था कि हम मानव न होकर यंत्रवत हो गए हैं। ऐसे में परिवार के साथ कुछ सुकून के लम्हे बिताने के लिए अमरकंटक जाने का निर्णय लिया।

पावस ऋतु के अवसान का समय था, परंतु प्रकृति पूरे शबाब पर थी। रास्ते भर प्रकृति के खूबसूरत नजारों से सफर की सारी थकानें छूमंतर हो गई। अमरकंटक को प्रकृति मां ने अपने हाथों से श्रृंगार किया है। सड़क के दोनों तरफ खड़े ऊंचे ऊंचे वृक्ष मानो बाहें फैलाए हमें अपनी तरफ बुला रहे हैं। जहां जहां तक नजरें जाती, हरे-भरे वृक्ष, लताएं, पुष्प और कल -कल प्रवाहित होती नर्मदा नदी। संगमरमर से बने मंदिर व नर्मदा का पवित्र कुंड देखकर मन आह्लादित हो गया। थोड़ी दूर पर ही दुग्ध धारा जलप्रपात देखकर तो शरीर का रोम -रोम पुलकित हो गया। नया उत्साह व नई ऊर्जा भर कर मैं वापस तो आ गई, परंतु मन अमरकंटक की हरी-भरी वादियों में ही छोड़ आई।

दुग्ध की धारा
हरी-भरी वादियां
धरा श्रृंगार।

- श्रीमती हरावती लकडा
सीतापुर,सरगुजा, (छत्तीसगढ़)

खूबसूरत गाँव मायलिनांग

ये उस समय की बात है जब हम शिलाँग ट्रिप पर गये थे ! मेघालय स्थित यह जगह बहुत ही सुंदर है। हरियाली ही हरियाली, और तो और झरने, तालाबों ने जैसे सुंदरता का चाँद लगा दिया हो। पहले दिन झरने, गुफ़ा, तालाब (लेक) देखने के बाद दूसरे दिन हम डावकी लेक देखने निकल पड़े। रास्ता बहुत ही अच्छा था। दोनों तरफ़ हरियाली देख मन प्रफुल्लित हो उठा।

डावकी लेक का पानी बहुत ही स्वच्छ है। नाव में बैठकर , इसकी सुंदरता का आनंद लेते हुए आप अपना प्रतिबिंब भी इस पानी में देख सकते हैं। है न आश्चर्य की बात ! फिर हम आ पहुँचे एशिया का सबसे खूबसूरत गाँव मायलिनांग में । सुंदर स्वच्छ रास्ते, बाग-बगीचे और छोटे खूबसूरत घर, यहाँ कचरे का कहीं नामोनिशान नहीं।

बेहद स्वच्छ
खूबसूरत गाँव
मायलिनांग।

- डॉ. श्रद्धा वाशिमकर

डॉ. मिथिलेश दीक्षित जी द्वारा संपादित पुस्तक
प्रकृति एवं हाइबुन

समीक्षक : अजय चरणम्

आदरणीया डॉ. मिथिलेश दीक्षित जी द्वारा संपादित एक पुस्तक आई है 'प्रकृति एवं हाइबुन'। यह हिन्दी का पहला हाइबुन संकलन है। परम विदुषी डॉ. दीक्षित संपादकीय में लिखती हैं-"हाइबुन सर्जक की गहन अनुभूति के विशिष्ट क्षण की ऐसी अभिव्यक्ति है, जो लघु रचना के रूप में प्रायः यात्रा के समय प्रस्फुटित होती थी। ... इस भावपूर्ण गद्यात्मक लघु रचना के अन्त में एक हाइकु भी प्रस्तुत करने की परम्परा आज भी है।"

वहीं 'हाइकु मञ्जूषा' के सम्पादक आदरणीय प्रदीप कुमार दाश 'दीपक' जी लिखते हैं- "हाइबुन एक गद्य कविता है, इसके गद्य में पद्य के पुट रहते हैं। इसे यात्रा विवरण के रूप में लिखा जाता है। ... हाइबुन में आमतौर पर केवल एक हाइकु सम्मिलित किया जाता है, जो गद्य के बाद होता है, गद्य के चरमोत्कर्ष के रूप में 'हाइकु' अपनी सेवा प्रदान करते हुए हाइबुन का प्रतिनिधित्व करता है।"

मेरी दृष्टि में, "हाइबुन यात्रा की अनुभूति की संक्षिप्त गद्यात्मक अभिव्यक्ति है और जिसका अन्त एक सारमय हाइकु से होता है।"

हाइबुन पर आप विशेष जानकारी इसी पुस्तक की संपादकीय, अन्य समीक्षा या इसी पुस्तक पर जापानी साहित्य विधाओं के मर्मज्ञ प्रदीप कुमार दाश 'दीपक'की उत्कृष्ट समीक्षा से प्राप्त कर सकते हैं।

इस पुस्तक में उन्नीस हाइकुकारों के हाइबुन संकलित हैं, जिसमें- आनन्द प्रकाश शाक्य जी, अंजु श्रीवास्तव निगम जी, इन्दिरा किसलय जी, डॉ. कल्पना दुबे जी, कनक

हरलालका जी, निहाल चन्द्र शिवहरे जी, नीना छिब्बर जी, प्रदीप कुमार दाश 'दीपक' जी, पुष्पा सिंघी जी, डॉ. मिथिलेश दीक्षित जी, डॉ. रवीन्द्र प्रभात जी, डॉ. लवलेश दत्त जी, वर्षा अग्रवाल जी, सरस दरबारी जी, डॉ. सुषमा सिंह जी, डॉ. सुकेश शर्मा जी, डॉ. सुभाषिनी शर्मा जी, डॉ. सुरंगमा यादव जी और मैं हूँ। आपसे आग्रह है, हाइबुन का आनंद लें ... ।

इस पुस्तक के सभी हाइबुनकारों को हार्दिक बधाई और अशेष शुभकामनाएँ ...!

- अजय चरणम्
पूरब आजीम गंज, हवेली खड़गपुर
मुंगेर- 811213
मो.- 9572171909

समसामयिक हाइकु संचयनिका (त्रैमासिक पत्रिका)

वार्षिक सदस्यता राशि- 400/--

पंच वर्षीय सदस्यता राशि 1600/--

संरक्षक - 10000/--

हाइकु मञ्जूषा के सदस्य

(1) डॉ. मिथिलेश दीक्षित (संरक्षक)

(1) रुबी दास (पंच वर्षीय), (2) डॉ. सुशीला सिंह (पंच वर्षीय), (3) तुकाराम पुंडलिकराव खिल्लारे (पंच वर्षीय), (4) देवयानी बनर्जी (पंच वर्षीय), (5) डॉ. श्रद्धा वाशिमकर (पंच वर्षीय), (6) सूर्यनारायण गुप्त सूर्य (पंच वर्षीय), (7) अलंकार आच्छा (पंच वर्षीय), (8) अविनाश बागड़े (पंच वर्षीय), (9) अजय चरणम् (पंच वर्षीय), (10) श्रवण चोरनेले 'श्रवण' (पंच वर्षीय), (11) डॉ. पूर्वा शर्मा (पंच वर्षीय), (12) आभा दवे (पंच वर्षीय)

(1) सुरेन्द्र बांसल जी (वार्षिक, (2) राजेन्द्र सिंह राठौड़ जी (वार्षिक), (3) प्रवीण सिंह बी. सिंदल जी (वार्षिक), (4) चन्द्र प्रभा जी (वार्षिक), (5) प्रमोदिनी शर्मा जी (वार्षिक), (6) मीनाक्षी कुमावत 'मीरा' जी (वार्षिक), (7) अनिमा दास जी (वार्षिक), (8) श्रवण कालवा जी (वार्षिक), (9) निर्मला हांडे जी (वार्षिक), (10) अमिता शाह 'अमी' जी (वार्षिक), (11) विष्णु शास्त्री 'सरल' जी (वार्षिक), (12) राधाबल्लभ अग्रवाल जी (वार्षिक), (13) आर्विली आशेन्द्र लूका जी (वार्षिक), (14) मनीष कुमार श्रीवास्तव जी (वार्षिक), (15) पुष्पा मेहरा जी (वार्षिक), (16) चंद्रभान मैनवाल जी (वार्षिक), (17) डॉ. निहाल चंद्र शिवहरे जी (वार्षिक), (18) डॉ. मंजू यादव 'मृदुल' जी (वार्षिक), (19) विनीत मोहन औदिच्य जी (वार्षिक), (20) हरावती लकड़ा जी (वार्षिक), (21) आर.के.निगम 'राज' जी (वार्षिक), (22) प्रतिमा प्रधान जी (वार्षिक), (23) स्वाति गुप्ता जी (वार्षिक), (24) डॉ. नीना छिब्बर जी (वार्षिक), (25) इन्दिरा किसलय जी (वार्षिक), (26) आरती परीख जी (वार्षिक), (27) सुनीता दीक्षित जी (वार्षिक), (28) निर्मला सुरेंद्रन जी (वार्षिक), (29) कल्पना दुबे जी (वार्षिक), (30) अर्चना अनुपम जी (वार्षिक), (31) वर्षा अग्रवाल जी (वार्षिक), (32) प्रतिभा त्रिपाठी जी (वार्षिक), (33) अंजू श्रीवास्तव निगम जी (वार्षिक), (34) सावित्री कुमार जी (वार्षिक), (35) डॉ. सुरंगमा यादव जी (वार्षिक), (36) सरस दरबारी जी (वार्षिक)

'हाइकु मञ्जूषा'* देश की एकल त्रैमासिक समसामयिक हाइकु पत्रिका का सदस्य बन कर आप भी हाइकु विधा के प्रसार में सहयोगी बनें। जुलाई-सितंबर 2023 तक जिन सदस्यों की वार्षिक सदस्यता समाप्त हो रही है, इस सूची में उन सदस्यों का नाम विलोपित है। पत्रिका प्राप्ति की निरंतरता के लिए विलोपित तथा नवीन हाइकुकार/पाठक मित्रों से विशेष आग्रह है कि (वार्षिक/पंचवर्षीय) नवीन/नवीनीकरण शुल्क प्रेषित कर पत्रिका के प्रसार में आप अपना अमूल्य सहयोग अवश्य प्रदान करें। आपके स्नेहिल सहयोग की प्रतीक्षा में आपका मित्र-

- प्रदीप कुमार दाश 'दीपक'
संपादक : हाइकु मञ्जूषा
मो.नं. 7828104111

हार्डबाउंड, पेपर बैक, ई-बुक व ऑडियो-बुक
ISBN के साथ किसी भी
भाषा में प्रकाशन के लिए हमें कल करें या लिखें।

सर्व भाषा ट्रस्ट
नई दिल्ली

E-mail : sbtpublication@gmail.com
Contact : 011-3501-3521, 9205461387

sbtpublication sarvbhashatrust Sarv Bhasha Trust
sarvbhashatrust sbhashatrust

हमारे यहाँ से प्रकाशित 30+ भाषाओं में 750+ पुस्तकें
www.sarvbhasha.in पर उपलब्ध हैं।

प्रदीप कुमार दाश 'दीपक'

संपादक

हाइकु मञ्जूषा

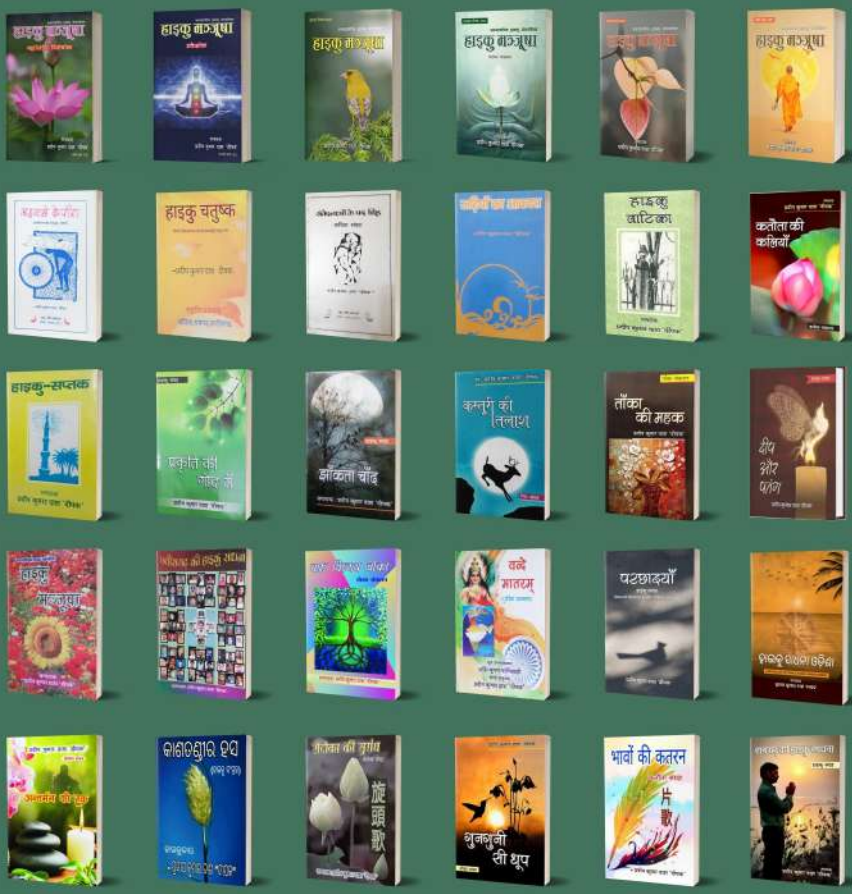

प्रकाशन

सर्वभाषा ट्रस्ट, नई दिल्ली

011-3501-3521, 9205461387